ARJUN BATCH
CLASS 12th | HISTORY
राजा, किसान और नगर
Chapter-2 | Part-5
आरंभिक राज्य और अर्थव्यवस्थाएँ (लगभग 600 ई.पू. से 600 ई.)

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

आज क्या पढेंगे ?

1. राजधर्म के नवीन सिद्धांत
2. सरदार और सरदारी
3. भेटों के उदाहरण का एक स्त्रोत
4. दैविक राजा

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

मौर्य प्रशासन

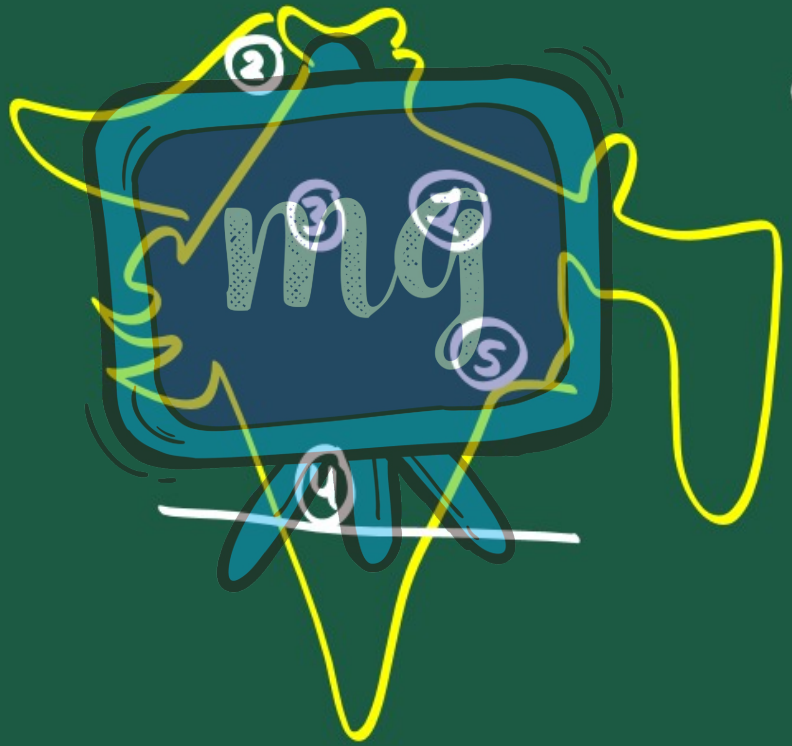

सम्प्रति = 'सैन्य'

RIICO GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

1. केरल
2. आ.प्र
3. तमिल नाडु

तमिलकम =

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

[संगम काल] → चोल, चेर, पाण्ड्य

300 ई.पू. - 300 ई.

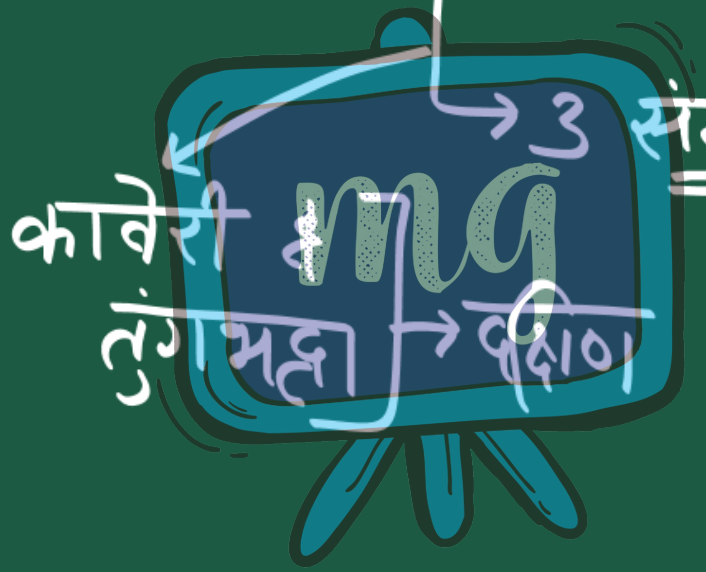

→ 3 संगोष्ठी → तमिल

कावेरी

तुंगभद्रा → मदुरा

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

दक्षिण

सरदारिया → सरदार

उत्तर

भारत → राजा

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

राजधर्म के नवीन सिद्धांत

दक्षिण के राजा और सरदार :-

उपमहाद्वीप के दक्कन और उससे दक्षिण के क्षेत्र में स्थित तमिलकम (तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और केरल) में (i) चोल, (ii) चेर, (iii) पाण्ड्य जैसी सरदारियों का उदय हुआ।

ये राज्य बहुत ही समृद्ध और स्थायी सिद्ध हुए।

प्राचीन तमिल संगम ग्रंथों में सरदारियों का विवरण है। इससे इन सरदारों की जानकारी मिलती है।

संगम काल

R. S. Sharma - 300-600 ई.

'प्राचीनतम साहित्य तमिल भाषा'

पाण्ड्य ——— 1) मदुरा
2) कपाटपुरम
3) मदुरा

तोल्लकापियम
(व्याकरण ग्रंथ)

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

8. सरदार कौन थे?

सरदारी क्या है?

* वंशानुगत/नहीं
* कार्य
  - अनुष्ठान
  - युद्ध
  - मध्यस्थता

सरदार और सरदारी :-

- सरदार एक शक्तिशाली व्यक्ति होता है जिसका पद वंशानुगत भी हो सकता है और नहीं भी।
- सरदारी के समर्थक उसके खानदान के लोग होते थे।
- कार्य – (i) विशेष अनुष्ठानों का संचालन
  (ii) युद्ध के समय नेतृत्व करना
  (iii) विवादों में मध्यस्थता करके सुलझाना
- वह अपने अधीन लोगों में भेंट लेता था। (जबकि राज्य कर-वसूली करते हैं) तथा उसके समर्थकों में उस भेंट का वितरण करता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- सरदारी में सामान्यतया कोई स्थायी सेना या अधिकारी नहीं होते हैं।
- कई सरदार और राजा लम्बी दूरी के व्यापार द्वारा राजस्व जुटाते थे इसके 2 उदाहरण हैं –
  (i) सातवाहन शासक (200 ई. पू. – 200 ई.)– मध्य एवं पश्चिमी भारत के क्षेत्रों पर शासन था।
  (ii) शक शासक मध्य एशियाई मूल के – पश्चिमोत्तर और पश्चिम के भागों पर शासन था।
- सातवाहन शासकों ने एक बार सत्ता में आने के बाद ऊँचे सामाजिक अस्तित्व का दावा कई प्रकार से किया।

Q. तमिल्लकम क्या है?

Q. संगम काल ?

Q. सरदार कौन थे ?

Q. सरदारियां पर एक लेख लिखें

Q. (किन्हीं) दो सरदारियों/राजा के नाम लिखे जो लम्बी दूरी के व्यापार से कर लिया करते थे?

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कोवलन कण्णगी

भेटों के उदाहरण का एक स्त्रोत

पाण्ड्य सरदार

सेनगुत्तुवन की वनयात्रा

(तमिल महाकाव्य – सिलप्पादिकारम् का अंश)

जब वह वन की यात्रा पर थे तो लोग नाचते–गाते हुए पहाड़ों से ठीक उसी प्रकार से उतरे जैसे पराजित होकर विजयी का आदर करते हैं।

वे अपने साथ उपहार – हाथी दाँत, सुगन्धित लकड़ी, हिरणों के बालों के बने चँवर, मधु, चंदन, गेरू, सुरमा, हल्दी, इलायची, मिर्च लाये।

वे नारियल, आम, जड़ी बूटी, फल, प्याज, गन्ना, फूल, सुपारी, केला भी लाये।

वे बाघों के बच्चे शेर, हाथी, बंदर, भालू, हिरण, कस्तूरी मृग, लोमड़ी, मोर, जंगली मुर्गे तथा बोलने वाले तोते भी लाये।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

राजा

भगवान

देवपुत्र

देवता

1. सामाजिक प्रतिष्ठा
2. प्रजा
3. सैन्य

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

9. दैविक राजा का सिद्धांत

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

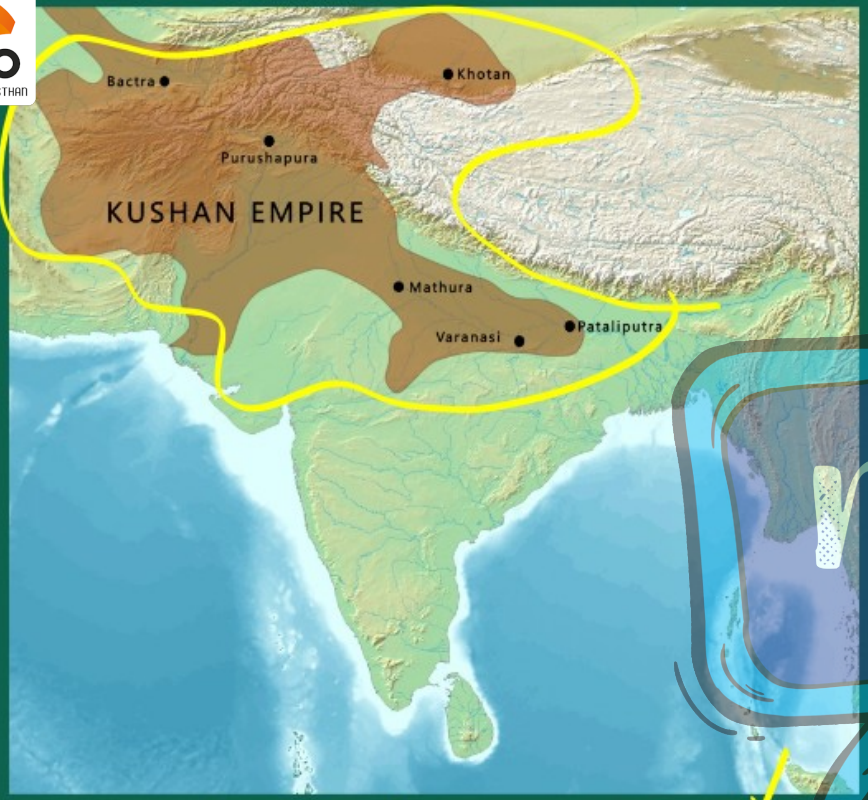

भारतीय साहित्य - सिथियन

युची कबीला ——→ 5 शाखा

↓

चाऊ आंग शाखा

दैविक राजा :-

- राजाओं के लिए उच्च स्थिति प्राप्त करने का एक साधन विभिन्न देवी देवताओं के साथ जुड़ना था।

कुषाण :-

- मध्य एशिया से लेकर पश्चिमोत्तर भारत तक शासन करने वाले कुषाण शासकों ने (100 ई. पू. – 100 ई. तक)। इस उपाय का सबसे अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया।
- भारत में कुषाण वंश का पहला विख्यात शासक कुजुल-कडफिसस था। इसने अपने सिक्कों को रोमन सम्राट आगस्टस के सिक्कों के अनुरूप जारी किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. कनिष्क को द्वितीय अशोक क्यों कहा जाता था?

- कुषाण चीन से मध्य एशिया होते हुए भारत आये थे।
- कनिष्क सर्वाधिक महत्वपूर्ण शासक हुआ जिसने अपने राज्यारोहण के वर्ष 78 ई. से एक नये संवत शक संवत. चलाया।
- कनिष्क ने कैसर या सीजर की उपाधि धारण की।
- उसकी प्रथम राजधानी पेशावर तथा दूसरी मथुरा थी। उसने कश्मीर जीतकर वहां कनिष्कपुर नगर बसाया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- असोक के बाद कनिष्क ही बौद्ध धर्म का प्रबल समर्थक था। उसने बौद्ध विहारों, चैत्यों, स्तूपों का निर्माण कराया।
- कनिष्क ने चीन से रोम को जाने वाली सिल्क मार्ग पर अपना नियंत्रण स्थापित किया।
- इसे द्वितीय असोक भी कहते हैं।
- अश्वघोष (साहित्यकार), नागार्जुन (दार्शनिक और वैज्ञानिक) वसुमित्र तथा चरक (राजवैद्य) उसके दरबारी थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- कनिष्क ने बौद्ध धर्म को बढ़ावा दिया यहां तक की चौथी बौद्ध संगिति भी कनिष्क ने ही कुण्डलवन (कश्मीर) में प्रारम्भ की।
- कुषाण इतिहास की रचना अभिलेखों और साहित्य परम्परा के माध्यम से की गयी है।

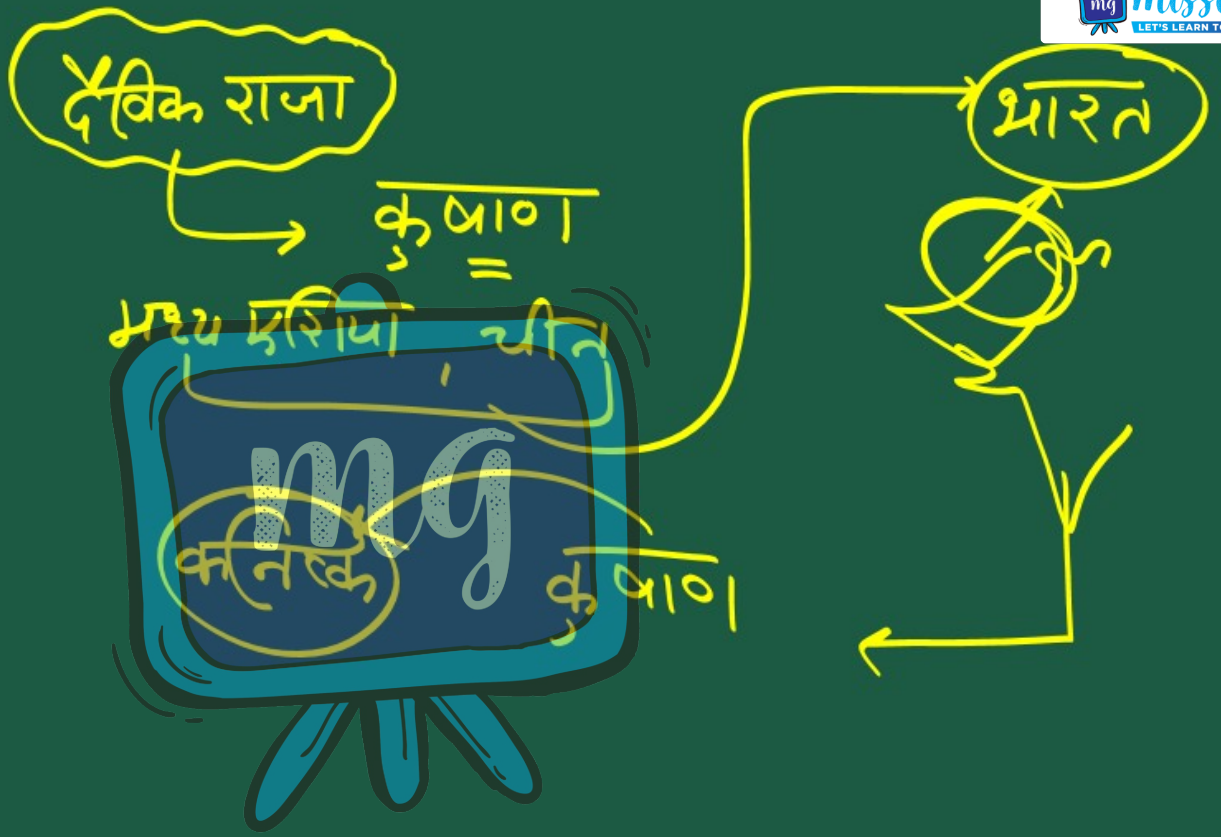

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

दैविक राजा

कुषाण = मध्य एशिया, चीन

भारत

कनिष्क

कुषाण

कुषाण जिस प्रकार का राजधर्म प्रस्तुत करना चाहते थे। उसका प्रमाण उनके सिक्के व मूर्तियां देती हैं।

एक कुषाण सिक्का

अग्र भाग –कनिष्क

पृष्ठ भाग – देवता